शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 62/5 अप्रैल-जून 2023 400.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय

हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
फोन : 0124-4076565, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा

डॉ॰ मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)

दिल्ली एन॰सी॰आर॰

डॉ॰ अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ॰ मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ॰ शंकर क्षेम
डॉ॰ प्रमोद सागर

उपसंपादक
डॉ॰ अशोककुमार
09557746346
डॉ॰ कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ॰ अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी॰ए॰

शुल्क
आजीवन (दस वर्ष): छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : एक हजार रुपए
यह प्रति : चार सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

Scanned with CamScanner

तुलसीदास और चंददास के काव्यों में नवधा भक्ति

डॉ॰ रोहिणी पंडियन
असि॰ प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग
सौराष्ट्र कालेज, मदुराई (तमिलनाडु)

श्रवणं कीर्तन विष्णोःस्मरणंपादसेवनम्
अर्चन वन्दनं दास्य सख्यमात्मनिवेदनम्।।

नवधा भक्ति को दो युगों सतयुग और त्रेतायुग में उल्लेखित किया गया है। सतयुग में भक्त प्रह्लाद ने अपने पिता हिरण्यकश्यप को नवधा भक्ति का उपदेश दिया था और त्रेतायुग में भगवान श्रीराम ने माता शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश दिया था। प्रह्लाद द्वारा कही गई नवधा भक्ति श्रीमद्भागवद पुराण के सातवें स्कंध के पाँचवें अध्याय में है। रामचरितमानस के अरण्यकांड में श्रीराम ने माता शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश तब दिया था जब वह स्वयं को नीच और अधम कहते हुए प्रभु की स्तुति करने में झिझक रही थीं। श्रीमद्भागवत महापुराण और रामचरितमानस नवधा भक्ति के बारे में कहता है कि श्रवण (परीक्षित), कीर्तन (शुकदेव), स्मरण (प्रह्लाद), पादसेवन (लक्ष्मी), अर्चन (पृथुराजा), वंदन (अक्रूर), दास्य (हनुमान), साख्य (अर्जुन) और आत्मनिवेदन (बलि राजा)–इन्हें नवधा भक्ति कहते हैं।

भगवान राम शबरी के समक्ष नवधा भक्ति का स्वरूप प्रकट करते हुए उनसे कहते हैं कि

नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं, सावधान सुनु धरु मन माहीं।
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा, दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।

अर्थात मैं तुझसे अब अपनी नवधा भक्ति कहता हूँ। तू सावधान होकर सुन और मन में धारण कर।[1]

भागवत में नवलक्षणा, अध्यात्मरामायण में नवविद्या, मानस में नवधा और चंद्रदास पदावली में नूतन (नवधानयी), नवधाभक्ति के संदर्भ में प्रयुक्त हुई है। नवधा का रूप प्राय: परंपरागत ही रहा है। तुलसी ने भी उसी परंपरा का अनुभावन किया है। भागतवतकार व्यास के बाद नवधा निरूपण के क्षेत्र में चंददास का नाम उल्लेखनीय है। भक्ति आचार्यत्व के क्षेत्र में महर्षि व्यास के नवधा निरूपण के पीछे जैसी परिकल्पना थी, उसी का एक और विराट रूप चंद की नवधा में प्रतिफलित हुआ है। आश्चर्य यह है कि चंद ने नवधा निरूपण में जहाँ एक ओर व्यास से निर्गत होने वाली नवधा की भक्तिमूलक मूलवृत्ति को खंडित होने से बचाया है। वहीं दूसरी ओर चंद ने [illegible] हठयोगियों और शाक्त संप्रदाय आदि साधना पद्धतियों का भी समीकरण किया है। इस दृष्टि से चंददास का नाम व्यास, रूप गोस्वामी और बोपदेव जैसे आचार्यों के साथ रखा जा सकता है।

महाकवि चंददास ने अपने ग्रंथ 'शिवसिद्ध सारंगी' के नवधा निरूपण शीर्षक प्रकरण के अंतर्गत नवधा का निरूपण किया है।

प्रथम भक्ति–तुलसी के अनुसार नवधा भक्ति में प्रथम भक्ति 'प्रथम भगति संतन्ह कर संगा।'[2] अर्थात् संतों की सत्संगति है। तुलसी ने संतों की सतसंगति को नवधा भक्ति के प्रकार प्रथम प्रकार के रूप में स्वीकार किया है। संतों की संगति के द्वारा ही राम के गुणों की महिमा का ज्ञान हो सकता है। उसी तरह चंददास ने प्रथम भक्ति के रूप में गुरु की भक्ति को स्वीकार किया है। 'नौ [illegible] हरि भक्ति विधाना, प्रथम लेइ सतगुरु सो ग्याना।' प्रथम भक्ति 'गुरु पंथ रत, साधु निर्मल [illegible] अब बरनी जन दूसरी गुरुभक्ति से अभेद-भक्ति' तक कवि ने भक्ति के नौ सोपानों में भक्त के अंतर में परिवर्तित होने, भावों दशाओं को वैज्ञानिक आधार मानकर चित्रित किया है। गुरुभक्ति से भक्ति बीजारोपण होता है तथा अभेद भक्ति अभेद दृष्टि द्वारा सृष्टि के तत्वज्ञान का अखंड दर्शन कराती है। चंद का नवधा निरूपण व्यष्टि से समष्टि की यात्रा है। राम पदावली के एक पद में महाकवि चंददास ने अपनी नवधा का परिचय प्रस्तुत किया है–

निर्मल नाम भगत रस रसना, सतगुरु सीख दई।
पढ़ पढ़ सार साध सतगुरु की, ते निर्मल पद सीखे।
चंद अमर तन कलप कोट ले छिन भर जाहि सो चीखे।
रसिक पान भगवान नाम कर, जाहि सुमारग दीन्हों
अनुगुन दाह ताप दारुनयहु, सतगुर मंत्रहि छीन्ही।[3]

दूसरी भक्ति–नवधा भक्ति में तुलसी के अनुसार दूसरी भक्ति राम का गुणगान करना है। इसलिए तुलसी कहते हैं कि 'दूसरि रति मम कथा प्रसंगा'[4] तुलसी राम की जय-जयकार करते हुए कहते हैं जो ताड़का, सुबाहु, मारीच जैसे आततायियों के गर्व को चूर करनेवाले, मुनियों के यज्ञ की रक्षा में दक्ष, पति के शाप से शिला बनी अहिल्या का उद्धार करने वाले, करुणा की खान हैं।

ताड़का सुबाहु मथन मारीच मान हर
मुनि मख रच्छन दच्छ सिला तारन
करुनाकर नृप गन बल पद सहित
संभु को दंड बिहंडन जय कुठार घर
दर्प दलन दिनकर कुल मंडन।[5]

वहीं चंददास ने नवद्याभक्ति के दूसरी भक्ति के रूप में ब्रह्म-भक्ति को माना है। चंददास एक ही ब्रह्म की सत्ता को स्वीकार कर उसी की उपासना में निरत रहे। यह ब्रह्म रूप रेखा से हीन सर्वव्यापक एवं अजन्मा है। ब्रह्म के स्वयंभू रूप की परिकल्पना कर जब उसकी उपासना की गई है तब उसे निराकार स्वीकार किया गया है। जब उसने अवतार धारण कर पृथ्वीलोक में लीलाएँ की तो उसे सगुण कहा गया। राममय साधक की अनन्यता को संपूर्ण संसार का वैभव भी नहीं विचलित कर सकता। प्राणदान करके भी भक्त भक्ति का सौदा करता है। ब्रह्म भक्ति के अंतर्गत चंद ने सेवक और सेव्य भाव की अभिव्यंजना की है–

निसदिन नेह देह सम चातक, तुअ गुन सावन सुनी।
चंद अधम अब परी पाव तर तासों दास कहीजे।
चंददास सो दास राम को, साची मान सही।
पद बंद बंदन लाय चंदन, नास हित संताप।
चंद हमरे अपर नाहीं, राम माई बाप।।[6]

तीसरी भक्ति–नवधा भक्ति में तुलसी के अनुसार तीसरी भक्ति अभिमान रहित होकर राम के चरण कमलों की सेवा करना है। अभिमान चाहे ज्ञान का हो या धन का या बल, योग, तप, सत्ता

Scanned with CamScanner

का हो, वह समस्त अनर्थों की जड़ है जिसके कारण लोक तो बिगड़ता है ईश्वर भी नहीं मिल सकता। तुलसी की भक्ति में प्रेम ही महत्त्वपूर्ण है।

वेद न पुरान-गानु, जानौं न बिग्यानु ग्यानु
ध्यान-धारना-समाधि साधन प्रबीनता
नहिन बिरागु जोग जाग भाग तुलसी के
लोभ मोह काम कोह दोस कोस मोसो कौन
कलिहुं जो सीखि लई मेरियो मलीनता
एक ही भरोसो समा सबसे कहावत हौं
सरे दयालु दीनबंधु मेरी दीनता।[7]

नवधा भक्ति में जहाँ तुलसी ने तीसरी भक्ति अभिमान रहित होकर राम के चरणकमलों की सेवा करना बताया है। वहीं चंददास ने हठभक्ति को ही नवधा भक्ति में तीसरा स्थान दिया है। चंद ने हठभक्ति में भक्ति का योग तत्त्वों से हिंदी साहित्य में प्रथम बार समन्वित किया है। कबीर एवं तुलसी ने योग एवं भक्ति का समन्वय करने का प्रयत्न किया था किंतु कबीर मूल रूप से योग के समीप रहे एवं तुलसी मूलतः भक्ति के निकट। चंद ने व्यापक समन्वय दृष्टि से हठयोग से हठ शब्द एवं हठी संप्रदाय से हठभक्ति को ग्रहण करके हठभक्ति को नवधा में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया है। महाकवि चंददास ने अपने एक अन्य ग्रंथ 'शिव सिद्ध सारंगी' में नवधा निरूपण के अंतर्गत 'योग, भक्ति अरु भक्ति रस, संतत मम हित एक' कहकर नवधा भक्ति के अंतर्गत हठयोग को समन्विति प्रदान की है। निम्नांकित पद में महाकवि चंद्रदास ने हठयोग साधना का अनुभूतिपरक चित्रण किया है। भक्त प्रथमतः हरि नाम श्रवण कर उसके प्रति लगन जाग्रत कर समर्पित होता है। निरंतर हरि का ध्यान करता है–

राम नाम सुनाय बल जाऊँ
वन अंतर ग्यानगुर दे, प्रान को परचाय
ध्यान भर दृग आन मूरत, प्रेम सो पतियाय
नाद मंडल अगुनमध्ये,
सबद राखे छाय लगन चात्रकरटन असी,
सुरत अपर न जाय।
हेम मध्य सुहाग तासी, वरन रूप समाय।
छीर जल सम करे आतम, ब्रह्म जीव मिलाय
चंद कसमलनासकाई, जो ततोन्हराय।[8]

चौथी भक्ति–चौथी भक्ति तुलसीदास के अनुसार चौथी भक्ति यह है कि कपट छोड़कर राम के गुण समूहों का गान करे। पाप लोभ, भोर काम, क्रोध आदि दोषों से युक्त व्यक्ति राम की भक्ति का अधिकारी नहीं हो सकता है। इन सभी दोषों से मुक्त होकर ही व्यक्ति प्रभु की भक्ति का पात्र बन सकता है उनके ईश्वर जो राम हैं, आगम निगम द्वारा बताए गए अगम अगोचर, रहस्यमय नहीं है, अपितु अभागे, पीड़ित एवं अनाथों का पालन करनेवाले हैं, दीनबंधु हैं, गरीबों को निहाल करनेवाले हैं।

आलसी अभागी अघी-आरत-अनाथपाल,
साहेबु समर्थ एक, नीकें मन गुनी में।
दोष दुख-दरिद-दलैया दीनबंधु रामा
तुलसी न दूसरी दयानिधान दुनी में।[10]

इसी प्रकार चंददास अपने द्वारा निरूपित नवधा भक्ति के चतुर्थ प्रकार में दान की प्रतिष्ठापना की है। दान धर्म का अंग है। साहित्य में दान को भक्ति का अंग नहीं स्वीकार किया। क्रांतिदृष्टा कवि चंददास ने प्रथम बार कर्ण का प्राणदान भक्ति का आदर्श उदाहरण दिया है। यह दान भक्ति वेदानुमोदित दान धर्म का भक्ति के रूप में स्वीकरण है। दान की भक्ति के रूप में प्रतिष्ठापना चंद की मौलिक चिंतना का परिणाम है–

आवत संत जब जब
राम राम उपदेस दान के अवगुन सर्व निवारे।
रसना रसिक करी रसियन सी, अनरस रास बिसारे।
कानन लाय गाय हरि कीरत, कीरत करम प्रहारे।
चंद धन्य जन धन्य लोक महि, सुरमुन वेद पुकारे।[10]

पाँचवीं भक्ति–पाँचवीं भक्ति में तुलसी ने राम के मंत्रों का जाप और राम पर पूर्ण विश्वास माना है। यही पाँचवी भक्ति है जो वेदों में प्रसिद्ध है। तुलसीदास के अनुसार राम का नाम जोग, तप, ज्ञान, वैराग्य, व्रत, तीर्थ आदि जितने भी धर्म के नाम पर वेदों, शास्त्रों, पुराणों द्वारा स्थापित बाह्याचार एवं कठिन साधना के विधि विधान हैं उनमें राम का नाम सर्वोपरि है। इसलिए तुलसीदास लोक-परलोक सबको राम के अधीन मानते हुए केवल राम पर ही विश्वास करते हैं।

मेरे जाति पांति न चहीं काहू की जाति-पांति,
मेरे कोउ काम को न हो काहू के काम को।
लोक-परलोकु रघुनाथ ही के हाथ सब,
मारी है भरोसी तुलसी के एक नाम हो।[11]

चंददास के अनुसार नूतन नवधा भक्ति का पंचम प्रकार 'प्रेमा भक्ति' है। यह चंद की भक्ति भावना की अभिनव सृष्टि है। नवधा भक्ति के अन्य आचार्यों ने इसे दसम प्रकार के अंतर्गत स्वीकार किया था किंतु चंददास ने इसे नवधा के अंतर्गत ही मान्यता दी है। प्रेमाभक्ति के माध्यम से अपने प्रियतम को प्राप्त किया जा सकता है। चंददास ने इस भक्ति को माधुर्य भाव से पुष्ट माना है। उन्होंने इस भक्ति को लोकलाज और उसके बंधनों को तोड़कर आत्मा से आत्मा का मिलन माना है। इसी कारण चंद की गोपिकाएँ कृष्ण की वंशी की धुन सुनकर अपने गृह कार्यों से विरत होकर साज-शृंगार में निरत हो जाती है। अत्यधिक अधीरता के कारण एक अंग का आभूषण दूसरे अंग में धारण कर सुधबुध खोकर प्रियतम से मिलने यमुना के तट की ओर दौड़ पड़ती हैं। ऐसे समय में नेत्रों में काजल के स्थान पर महावर लगाना, पायल पैरों को स्थान पर कंठ में धारण करना तथा बेसर नासिका के स्थान पर हाथ में धारण करना हास्यस्पद और साहित्य शास्त्र की दृष्टि से विभ्रम प्रतीत होता है किंतु चंद की गोपिकाएँ लोक-लाज के बंधन तोड़कार आत्मा से आत्मा का ग्रंथि बंधन कर प्रेमाभक्ति की सिद्धि प्राप्त करती हैं।

स्याम कर मधुर माधुरी बीना।
जाके सुनत धाम तज बालक, तनम न होत अधीना।
अंचल पहिर अंग कट भूखन, कट पट मसति कलीना।
जावक लाय बिलोचन निकसी, पायल कंठ प्रवीना।

Scanned with CamScanner

बेसरबेस रची कर पल्लव, जैसी विभ्रम चीना।
चक्र सूरत डोर सी लागत, नित प्रत विरह नवीना।
ग्रह तज कान हान अपनी को व्याकुल जल तज मीना।
आय समीप चंद जनमाथी, परसत दृग लवलीना।[12]

छठी भक्ति–चंददास की छठी भक्ति है इंद्रियों का निग्रह, शील बहुत कार्यों से वैराग्य और निरंतर संत पुरुषों के धर्म में लगे रहना। काकभुशुंडि के इस कथन के द्वारा तुलसी ने ज्ञान और भक्ति दोनों की मर्यादा की रक्षा की है। तत्वत: ज्ञान और भक्ति में कुछ भी भेद नहीं, दोनों ही सांसारिक क्लेश को दूर करने में सक्षम हैं। ज्ञान, वैराग्य, योग, विज्ञान तुलसी की दृष्टि में हैं तो पुरुष तेज से संपन्न (न कि फटकन की तरह निस्तेज), किंतु माया आप्लावित संसार में इन्हें माया से, जो स्त्री-प्रकृति की है, विचलित हो जाने की आशंका बनी रहती है वैसे ही जैसे ज्ञान के भंडार मुनि भी मृगनयनी स्त्री के चंद्रमुख को देखते ही डोल उठते हैं। परंतु भक्ति भी स्त्री प्रकृति की है, अतएव जैसे एक नारी दूसरी नारी के रूप से कामासक्त नहीं होती, वैसे ही भक्ति को भी माया विचलित नहीं करती। और राम भी इसी भक्ति के अनुकूल रहते हैं–

भगतिहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा, उभय हरहिं भव संभव खेदा।
स्थान विराग जोग बिग्याना, ऐ सब पुरुष सुनहु हरि जाना।
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती, अबला अचल सहज जड़ जाती।[13]

चंददास ने भागवत भक्ति को नूतन नवधा भक्ति का प्रकार माना है कवि ने परंपरित नवधा के श्रवण, कीर्तन, स्मरण के कथा, ज्ञान गुन एवं शुभ भक्ति के रूप में चित्रित किया है–

सीला ललित राम की।
जब तज ग्राम चले कानन को, सो छवप्राननप्रानो।
निर्मल नीर सो जानी प्रात ही संगम
मध्य धार पूरन गुन, कार मंजन इसनानी।
गीता पाठ बाट सुन वेद, प्रभु प्रतमा व्रत ध्यानी
राग विराग रसना, हरि हरि चरना वानी।
चरन कमल रज पायपुन्न सो कीरतमहि प्रगटानी।

उक्त भागवत भक्ति को नूतन नवधा के अंतर्गत चंददास ने श्रेष्ठभक्ति के रूप में स्वीकार किया है। निम्नलिखित पदावली में कवि ने भक्ति के स्वरूपों पर भी दृष्टि डालते हुए भगवत भक्ति की श्रेष्ठता का भाव प्रदर्शित किया है। श्रीमद्भागवत के आरंभ में ही भक्ति की सर्वोच्च महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कहा गया है जिनके हृदय में भक्ति का निवास है उन्हें प्रेत, पिशाच, राक्षस या दैत्य आदि स्पर्श करने में भी समर्थ नहीं हो सकते।

हरि के सरन लई जब सो
तब सो सर्वकलाप पाप की भारी मिट गई।
निर्मल नाम भगत रस रसना, सतगुर सीख दई।

सप्तम भक्ति–तुलसी ने सातवीं भक्ति के अंतर्गत पूरे जगत को राममय देखना माना है इसलिए तुलसी कहते हैं–

सातवँ सम मोहिमय जग देखा। मोते संत अधिक करि लेखा।।

तुलसी के अनुसार सारा विश्व जिस ईश्वर की वंदना करता है, समस्त देवता जिसकी सेवा करते हैं और सभी वेद-शास्त्र जिसके गुण-समूह का गान करते हैं, वह राम सुखकारी, गुरु, मित्र, दीनबंधु हैं, शरणगत की रक्षा करनेवाले और विपति को हरनेवाले हैं।

सकल विश्व-बंदित, सकल सुर-सेवित,
आगम-निगम कहै रावरे ई गुनग्राम
इहै जानि तुलसी तिहारी जन भयो।
म्यारो के गनियो जहाँ गने गरीब गुलाम।[15]

साख्य भक्ति को कवि चंददास ने सप्तम प्रकार की भक्ति के रूप में स्वीकार किया है। चंद की भक्ति सेवक सेव्य भाव की है। साख्य भक्ति भाव नवधा के अंतर्गत मित्रवत किए गए आत्म समर्पण का प्रतिरूप है। वैष्णव मतानुसार ईश्वर के प्रति वह भाव जिसमें ईश्वरावतार को भक्त अपना सखा मानता है, साख्य भक्ति भाव कहा जाता है यद्यपि महाकवि चंददास की भक्तिभावना में तुलसी की भाँति सेवक सेव्य भाव की प्रधानता है। राम के बाल्य चित्रण में 'हरि मीतीमितवे' लिखकर कवि ने मिताई के भाव द्वारा सख्य-भाव का प्रकटीकरण किया है–

हरि कीरत हितवे जा उर
बरत सार सुधार राम जस, चरनसरन चितवे।
दंभ विवाद द्रोह संसे सुख, सकले भय रितवे।
छिन पल घरी जाम दिन अहिनिस, बाद नहीं बितवे।
सो जन 'चंद' साधुगुन लायक, हरि मीतीमितवे।[16]

आठवीं भक्ति–तुलसी ने अपनी नवधा भक्ति के अंतर्गत आठवीं भक्ति में पराए में दोष न देखना बताया है–आठवं जया लाभ संतोषा। सपनेहु नहिं देखइ पर दोषा।

तू दयाल दीन हीं, तू दानि, ही भिखारी।
हों प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुंज-हारी।
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसो।
मो समान आरतनहि, आरविहरतोसो।
ब्रह्म तू ही जीव, तू है ठाकुर, हो चेरो।
तात मात, गुरु-सखा, तू सब विधि हितु मेरो।[17]

चंद के अनुसार आठवीं भक्ति में अचला भक्ति को माना है। इस भक्ति में साधक के लिए काम और कामना लोक का परित्याग आवश्यक है। अचला भक्ति में भक्त हरिभक्तिरस से सिद्ध होकर अचिन्तय एवं अडोल स्थिति को वरण कर लेता है। अचला भक्ति के अंतर्गत माध्य की सफला भक्ति का समावेश भी किया गया है–

समरस गोवर काव्य करी है।
मानो सुखद सिंध सागर वर, पूरन सुधा भरी है।
राम सुरसरस भीनो भयो मन विरही
विरह नेह नाही विध उर साधन रस चीन्हो
राम रस भर रहे जा उर प्रेम नेम
सुभाव साधु सुजस रखना कहेउ।
ध्यान डोरी भगत जोरी, नेमते मन गहेउ।[18]

तुलसी ने नवधा भक्ति के अंतिम सोपान के रूप में नवीं भक्ति 'नवम सरल सब सन छल

हीना। मम भरोस हिय हरष न दीना। अर्थात् नवीं भक्ति में छल विहीन होकर राम पर भरोसा करना बताया है। लोक को सँवारना हो या परलोक को, दोनों ही स्थितियों में जो परमावश्यक है वह है घमंड, छल-कपट से मुक्त होकर निरंतर प्रेम मार्ग पर बढ़ते जाना।

लोभ, मोह, काम, कोह, दोस, कोस, मोसो कौन
कलिहु जो सीखि लई मेरियो मलीनता
एक ही भरोसो मेरा सबसे कहावत हौ
मेरे दयालु दीनबंधु मेरी दीनता।[19]

चंद ने भक्ति के क्षेत्र में पारंपरित नवधा का संस्कार कर अपनी नूतन नवधा का प्रस्तुतीकरण किया तथा नौ प्रकार की भक्ति भावनाओं में सबसे अंतिम और उत्कृष्ट भक्ति के रूप में अभेद भक्ति की स्वीकृति प्रदान की। अभेद भक्ति भावना भक्ति के विभिन्न सिद्धांतों एवं तत्व उपस्थित करने वाली भावलोक के लिए विशेष दार्शनिक स्थिति है। इसमें चंददास ने नारायण हरि कृष्ण, राम, माधव, नंदलाल और गोविंद को तात्विक दृष्टि से अभेद रूप में स्वीकार किया है। अभेद भक्ति ही चंद की निरूपित नवधा की चरम परिणति है। चंददास की अभेद भक्ति उपासना में कबीर दादू, नानक का निर्गुण सुर मान का गिरधारी, तुलसी का धनुधारी राम एक साथ रसमय हो उठे हैं। चंद ने निर्गुण एवं सगुण के मध्य भी, भक्ति क्षेत्र में युगों से चली आ रही विभाजक रेखा को मिटाकर उनके मध्य भी अभेद की प्रतिष्ठापना की। चंद ने निर्गुण सगुण के भेद को कभी मान्यता प्रदान नहीं की। यह अभेद भक्ति भावना का मूल तथा प्रधान दर्शन है–

मुक्ता जोत न कीजे राम तजा रतन जनम
सो रतन लाभ से, काय नहीं भर लीजे
जैसी राम धाम जन आनी जाती पुत्र सो डीजे
सुधा नाम गोपाल लाल को सो तज विश्व भर पीजे
वेद मंत्र को पार जाम तज, पावन कथा सुनीजे।[20]

तुलसी की अगाध निष्ठा सीता-राम के लिए थी। समत्व भावना से युक्त महाकवि तुलसी को चर-अचर, अणु-परमाणु, समस्त लोक के कण-कण में सीता-राम की युगल छवि के ही दर्शन होते हैं। 'सियाराम मय सब जग जानी। करहु प्रनाम जोरि जुग पानी।।' आराध्य के प्रति तुलसी जैसी आस्था चंद के हृदय में भी है। तुलसी की काव्य रचना का काल मध्यकाल के अंतर्गत भक्तिकाल था और चंद का रीतिकाल। तुलसीदास अकबर के समकालीन थे और चंद औरंगजेब के तुलसी ने भक्ति के लिए सगुण को ही स्वीकृति दी, किंतु चंददास ने सगुण निर्गुण दोनों को सब प्रकार से स्वीकार किया। महाकवि तुलसी एवं चंद दोनों ने ही स्वयं को अराध्य की भक्ति के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित कर दिया। यहाँ तक कि उन्होंने राम को ही माता-पिता एवं सर्वस्व स्वीकार कर लिया।

तात, मात, गुरु, सखा तू सब विधिहि तुम मेरो।
चंद-चंद हमरे अपर नाही, राम भाई बाप।[21]

चंद का काव्य तुलसी के काव्य की भाँति विस्तृत है। एक दो रूपों में चंद तुलसी से आगे हैं। तुलसी की भक्ति में रागात्मकता अधिक है। चंद के रागात्मकता के साथ-साथ बौद्धिकता का भी विचित्र अनुबंध है। ग्रियर्सन ने कहा था कि भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय का ... इस आधार पर तुलसीदास एवं चंददास दोनों ही लोक-नायक की कोटि में

संदर्भ

1. तुलसीदास, रामचरितमानस, पृष्ठ- 611
2. तुलसीदास, रामचरितमानस, पृष्ठ-611
3. चंददास, रामपदावली, पद-6
4. तुलसीदास, रामचरितमानस, पृष्ठ-611
5. तुलसीदास और आधुनिकता, 104
6. चंददास, रामपदावली, पद-143
7. तुलसीदास और आधुनिकता 110
8. चंददास, रामपदावली, पद-22
9. तुलसीदास और आधुनिकता, 105
10. चंददास, रामपदावली, पद-65
11. तुलसीदास और आधुनिकता, 111
12. चंददास, रामपदावली, पद-62
13. तुलसीदास और आधुनिकता, 96
14. चंददास, रामपदावली, पद-63
15. तुलसीदास और आधुनिकता, 105
16. चंददास, रामपदावली, पद-62
17. तुलसीदास और आधुनिकता, 105
18. चंददास, कृष्ण पदावली, पद-324
19. तुलसीदास और आधुनिकता, 110
20. चंददास, कृष्ण पदावली, पद-77
21. चंददास, राम पदावली, पद-133

Dr. ROHINI PANDIAN
Assistant Professor & Head
Department of Hindi
Sourashtra college
Madurai 625002 (Tamilnadu)
rohinimaha77@gmail.com

Scanned with CamScanner